तमातिथ्यक्रियाशान्तरथक्षोभपरिश्रमम् ।

पप्रच्छ कुशलं राज्ये राज्याश्रममुनिं मुनिः ।।58।।

अन्वय मुनिः आतिथ्यक्रियाशान्तरथक्षोभपरिश्रमम् राज्याश्रममुनिं तं राज्ये कुशलं पप्रच्छ।

अनुवाद तब वशिष्ठ ऋषि ने, राज्य को आश्रम समझ उसमें मुनि के समान आचरण करने वाले राजा दिलीप से, जिसकी रथ के हिचकोलों के कारण हुई थकान अतिथि सत्कार से दूर हो गई थी, राज्य के विषय में कुशल-क्षेम पूछा।

टिप्पणियाँ

आतिथ्य यह लम्बा समास है। आतिथ्यस्य (अतिथि सत्कार) क्रिया (षष्ठी तत्पुरुष) इति आतिथ्यक्रिया, रथ-क्षोभेण (जातः) यः परिश्रमः सः रथक्षोभपरिश्रमः, आतिथ्यक्रियया शान्तः यस्य स आतिथ्यक्रियाशान्त-रथक्षोभपरिश्रमः, तम् (बहुव्रीहि), वह दिलीप जिसकी रथ के हिचकोलों से हुई थकान ऋषि द्वारा किए गए आतिथ्य से दूर हो गई थी। ऋषि के अतिथिसत्कार से दिलीप की मार्ग की थकान दूर हो गई, ऐसे दिलीप को।

पप्रच्छ धातु प्रच्छ् लिट्, अन्य पुरुष, एकवचन। पूछा।

विशेष दुह, याच् आदि धातुओं के समान प्रच्छ् धातु भी द्विकर्मक है। अतः इसके यहां दो कर्म हैं: 'कुशल' प्रधान कर्म तथा 'आश्रम मुनि' गौण कर्म। स 'अथाग्नार्या स्वाहा च हुतभुक् प्रिया' इत्यमरः।

राज्याश्रममुनिम् राज्यमेव आश्रमः इति राज्याश्रमः (कर्मधारय), राज्याश्रमे मुनिः (सप्तमी तत्पुरुष), तम्। राजा का विशेषण। वह राजा जो राज्य रूपी आश्रम के मुनि के समान

आचरण करता था। देखिए.''**पुण्यः शब्दो मुनिरिति मुहुः केवलं राजपूर्वः।**'' (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)।

विशेष कालिदास अपने काव्य के नायकों को राजा होने पर भी ऋषि के रूप में चित्रित करते हें। इसी प्रकार अभिज्ञानशाकुन्तल में दूसरे अंक के 14 वें पद्य में उन्होंने दुष्यन्त को भी राजर्षि कहा है। देखिए.''**अध्याक्रान्त वसतिरमुनाऽप्याश्रमे सर्वभोग्ये**'' इत्यादि। इससे स्पष्ट है कि कालिदास के नायक राजा होने पर भी भोगी, विलासी नहीं है अपितु मुनि के समान अनासक्त होकर प्रजा के कल्याण में लगे रहते हैं।